स्वच्छ जल – मौलिक मानवाधिकार

योगेश चन्द्र जोशी
रूड़की

स्वच्छ जल तक पहुँच सुनिश्चित करने को मौलिक मानवाधिकार (Fundamental Human Right) के अंतर्गत लाने की घोषणा की गई है। साथ ही स्वच्छता प्रणाली (Sanitation System) तक पहुँच को भी इसमें शामिल किया गया है। यह घोषणा संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 28 जुलाई, 2010 को की थी। हम जानते हैं कि स्वच्छ जल मानवीय आवश्यकता है, परंतु पूरे विश्व में 88.4 करोड़ लोग इस आवश्यकता से वंचित हैं। इसी प्रकार स्वच्छता तक विश्व की 40 प्रतिशत आबादी की पहुँच नहीं है। इसलिए इसे मानवाधिकार के तहत लाने का निर्णय लिया गया। हालांकि यह घोषणा सदस्य देशों के लिए बाध्यकारी नहीं है और न ही इसे मानवाधिकार की सार्वभौम घोषणा में शामिल किया जाएगा, परंतु संयुक्त राष्ट्र संघ ने सदस्य देशों से यह अपील की है कि वे पूरी आबादी की स्वच्छ जल तथा स्वच्छता प्रणाली तक पहुँच को सुनिश्चित कराने हेतु धन, प्रौद्योगिकी एवं अन्य संसाधन उपलब्ध कराएं।

संयुक्त राष्ट्र संघ सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्य में स्वच्छ जल तथा स्वच्छता तक पहुँच नहीं रखने वालों की आबादी को आधा करने का लक्ष्य रखा गया है। वैश्विक स्तर पर स्वच्छ पेयजल को सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा के 31वें अनुच्छेद के रूप में शामिल करने का अभियान चलाया जा रहा है। अभी तक 30 मानवाधिकारों को ही सार्वभौम घोषणा में शामिल किया गया है।

प्रकृति में मानव उपयोग के लिए जल की मात्रा सीमित है। कुल जल का 1 प्रतिशत से भी कम भाग नदियों, झीलों तालाबों इत्यादि में पाया जाता है, जो प्रत्यक्ष रूप से मानव के उपयोग में आता है। जल के सीमित स्रोत पर ही लगभग संपूर्ण मानव, वनस्पति एवं जीव–जंतु आश्रित हैं। इससे यह पता चलता है कि ये सभी इस स्रोतों का अंधाधुंध दोहन कर रहे हैं। जिससे भूमिगत जल का स्तर काफी नीचे चला गया है। घरेलू कार्यों में जल के अविवेक पूर्ण व अतिशय उपयोग ने नगरीय क्षेत्रों में पेय जल की समस्या उत्पन्न कर दी है। औद्योगिक संयंत्रों में जल को एक कच्चे पदार्थ के रूप में भी उपयोग किया जाता है। इसी कारण आवश्यकता से अधिक जल का उपयोग होने के कारण अन्य क्षेत्रों में जल का अभाव हो जाता है। जल की इसी सीमित मात्रा की वजह से जनमानस के सम्मुख अनेक प्रकार की समस्याएं पैदा हो गई हैं, जो निम्न प्रकार से देखी जा सकती हैं –

- विश्व में 88.4 करोड़ (884 मिलियन) लोगों की पहुँच स्वच्छ पेयजल तक नहीं है।
- लगभग 2.6 अरब लोगों कि पहुँच स्वच्छता प्रणाली तक नहीं है।
- विश्व में प्रतिवर्ष 20 लाख लोग गंदे पानी पीने और स्वच्छता के अभाव में मर जाते हैं, उनमें अधिकांश छोटे बच्चे शामिल हैं।
- मानव शरीर में दो–तिहाई हिस्सा जल का होता है, जबकि मस्तिष्क में केवल तीन चौथाई भाग जल का होता है।
- जल हमारे शरीर की पारगमन व शीतलन प्रणाली है। हम भोजन के बिना तो अधिक समय तक जिंदा रह सकते हैं परंतु जल के बिना कुछ ही दिन जीवित रहा जा सकता है।
- एक आंकड़े के अनुसार एड्स, मलेरिया व खसरे से जितने व्यक्ति नहीं मरते, उससे बहुत अधिक व्यक्ति गंदे जल के दुष्प्रभावों से मरते हैं।
- स्वच्छता के अभाव में पाँच वर्ष से कम उम्र के लगभग 15 लाख बच्चे प्रतिवर्ष काल के गाल में समा जाते हैं।

- जल व स्वच्छता से जुड़ी बीमारियों के कारण विश्व भर में प्रतिवर्ष 443 मिलियन स्कूली दिन बेकार चले जाते हैं।
- 6 अरब जनसंख्या में से एक अरब लोगों को पीने का साफ पानी नहीं मिल पा रहा है।

वर्तमान स्थिति को देखते हुए 21वीं सदी में पानी उतना मूल्यवान बन जायेगा जितना कि तेल 20वीं सदी में रहा था। पानी की कमी के कारण न केवल विश्व के विभिन्न देशों के बीच बल्कि स्वयं देशों के अंदर विभिन्न देशों तथा क्षेत्रों में भी आपसी विवाद तथा तनाव और भी बढ़ रहा है। अगले 50 वर्षों में तो स्थिति इतनी विकराल हो जाएगी कि लगभग ढाई अरब लोगों को शुद्ध पेयजल नसीब नहीं होगा। हवा के बाद मनुष्य के लिए दूसरी सबसे महत्वपूर्ण जरूरत जल की ही होती है, लेकिन विश्व के लगभग सभी देशों ने इस समस्या को गंभीरता से समझने की कोशिश नहीं की है।

विश्व बैंक ने अपनी एक ताजा रिपोर्ट में बताया है कि विकासशील देशों ने 1990–2000 के मध्य उद्योगों में जैसे कि कम्प्यूटर, यातायात व अन्य तकनीकी क्षेत्रों में जितनी अधिक पूंजी लगाई है, उसकी तुलना में जल प्रबंधन या जल से जुड़ी समस्याओं का दूर करने की मद में किया गया खर्च नहीं के बराबर हैं। मार्च 2001 में नीदरलैंड में आयोजित एक विश्व जल सम्मेलन में इस तथ्य को स्वीकार किया गया था कि जल वितरण की असमान्य तथा अनुपयोगी व्यवस्था के कारण जल संकट की समस्या उत्पन्न हुई है। इन्हीं सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए हमें यह समझना बहुत जरूरी हो गया है कि जल ही जीवन है इसके बिना जीवन असहनीय होगा।

पानी तो अनमोल है,
उसको बचा के रखिये।
बर्बाद मत कीजिये इसे,
जीने का सलीका सीखिए।

पानी को तरसते हैं,
धरती पे काफी लोग यहां
पानी ही तो दौलत है
पानी सा धन भला कहां

पानी की है मात्रा सीमित
पीने का पानी और सीमित
तो पानी को बचाइए
इसी में है समृधी निहित

शोविंग या कार की धुलाई
या जब करते हो स्नान
पानी की जरूर बचत करें
पानी से है धरती महान।।